

बाबा नागार्जुन की कविता में मजदूरों का जीवन चित्रण

डॉ.एस.सूर्यावती,

प्राध्यापिका, शाशकीय महाविद्यालय, चोडवरम, अनकापल्लि जिला, आंध्रप्रदेश

शोध सार

नागार्जुन की रचनाओं का केंद्र बिंदु सर्वहारा वर्ग है। इस वर्ग में वे गरीब और अशिक्षित मजदूर तथा ऋणग्रस्त किसान आते हैं, जो दिन-रात कड़ी मेहनत करने के बावजूद रोटी, कपड़ा और मकान जैसी बुनियादी जरूरतों से वंचित रहते हैं। जीवन की कठिन परिस्थितियों में ये लोग हमेशा धनिकों और मालिकों के सामने हाथ फैलाने को मजबूर रहते हैं। कवि ने समाज के इन पीड़ित और अभावग्रस्त लोगों की स्थिति को गहराई से देखा है और उनकी वेदना को अपनी कविता का स्वर बनाया है।

बीज शब्द: सर्वहारा वर्ग, पूँजीपति, सहानुभूति, श्रमिक, शोषण

शोध सारांश

कविवर नागार्जुन प्रगतिवादी काव्यधारा के सशक्त हस्ताक्षर हैं। इनका असली नाम 'वैद्यनाथ मिश्र' हैं। आपका जन्म बिहार के तरउनी गाँव में सन् 1911 ई. में हुआ था। आप 'यात्री' नाम से मैथिली में और 'नागार्जुन' नाम से हिन्दी में लिखते थे। विश्वविद्यालय की कोई डिग्री इनके पास नहीं है। अपने जीवन में जो कुछ उन्होंने देखा, सीखा, अनुभव किया वहीं लिखा। उनकी क्रांतिकारी भावनाओं की दृष्टि से कह सकते हैं कि 'कबीर' और 'निराला' की परंपरा के एक कड़ी के रूप में 'नागार्जुन' का नाम जुड़ चुका है। अपने लेखकीय व्यक्तित्व में नागार्जुन ने जो जोखिम उठाया है वह सबके बस की बात नहीं है।

नागार्जुन की दृष्टि उन पहलुओं पर गई है जिनसे आम आदमी का जीवन प्रभावित होता है। उन्हें अपने देश की मिट्टी और जन-जीवन से अद्भुत प्रेम है। वे अपने देश और जनता की दुर्दशा से पूरी तरह संपृक्त रहे हैं। उन्होंने अन्याय, शोषण के खिलाफ आवाज बुलंद की है। वे हमेशा शोषक, सर्वहारा, दलित वर्ग के पक्षधर रहे हैं। उनकी कविताओं में श्रमिकों की दयनीय जीवन का वर्णन मिलता है।

अंग्रेजों के शासन के समय जहाँ जमींदार वर्ग सामने आया, वहीं स्वतंत्र भारत में पूँजीपतियों ने तेजी से अपनी पकड़ मज़बूत कर ली। यह वर्ग बड़े उद्योगों, कारखानों और विशाल खेती योग्य ज़मीनों का मालिक बन गया। देश की राजनीति भी इनके दबाव में रही और अनेक नेता इनकी इच्छा के अनुसार कार्य करने लगे। श्रमिकों का शोषण करना और उनकी कमाई पर अधिकार जमाना इस वर्ग की मुख्य पहचान बन गई। बाबा नागार्जुन इन पीड़ितों और शोषितों के प्रति अपनी संवदना को उद्घाटित करते हैं। डॉ. नामवर सिंह का विचार है कि “ पीड़ितों और शोषितों के प्रति संवेदनशीलता इनकी विचारधारा का प्रधान अंग है। वे निम्न वर्ग के शोषण में क्षुब्ध हैं। जमींदारों के अत्याचार और अन्यायों का चित्रण करते समय मजदूरों और किसानों के प्रति हार्दिक सहानुभूति उन्होंने व्यक्त किया है।”¹

नागार्जुन का झुकाव सर्वाधिक उन लोगों की ओर है जो विषम परिस्थितियों में दम तोड़ रहा है। जो महँगाई, भूखमरा से बिलख रहा है। सर्वहारा वर्ग अधिक शोषण से ग्रसित हो रहा है। श्रमिक के आर्थिक शोषण पर दुःख व्यक्त करते हुये कहते हैं कि-

"संविधान का कवच पहनकर

देखो कैसे दुमक रही हैं

श्रमिकों के बोनस पर बिगड़ी

बमक रही हैं, ठुमक रही हैं।”²

नागार्जुन मजदूरों की दयनीय स्थिति से चिंतित हैं। अपनी स्थिति को बदलने के लिए लड़ने की सलाह देता है-

“ भूखों मरते हों बच्चे तो यों ही मत रह जाओ

आंते सूख रहीं हो तो आँसू मत वृथा बहाओ

हाथ-पैर वाले हों नाहक कायर नहीं कहाँ

कीड़ों और मकोड़ों जैसे यों मत प्राण गवाओ।”³

अर्थात् मजदूरों की जिंदगी बहुत ही दुःखदायक है। उपर्युक्त पंक्तियाँ मजदूरों के दर्दनाक जीवन को उद्घाटित करती हैं।

कवि नागार्जुन सामाजिक विषमता का मूल स्रोत पूँजीवादी व्यवस्था और संस्कृति को मानते हैं। समाज में व्याप्त विसंगतियाँ इसी पूँजीवादी व्यवस्था से पैदा हुई हैं। पूँजीवादी व्यवस्था के कारण किसान और मजदूर वर्ग सदैव उपेक्षित रहे हैं-

"जमींदार हैं, साहूकार हैं, बनिया हैं, व्यापारी हैं।

अन्दर-अन्दर विकत कसाई बाहर खद्दरदारी हैं।

सब घुस आए भरा पड़ा हैं, भारत माता का मंदिर

एक बार जो फिसले अगुआ,

फिसल रहे हैं फिर फिर फिर।"⁴

पूँजीवादी व्यवस्था में मजदूरों के श्रम को लूटकर शोषक वर्ग आराम की जिंदगी जीते हैं। शोषित वर्ग आर्थिक विषमता से गुजर रहे हैं। यह अभिशप्त जिंदगी पैतृक संपत्ति के रूप में मिली है। इसलिए नागार्जुन बड़े सहज ढंग से लिखते हैं-

"मैं दरिद्र हूँ। पुश्त-पुश्त यह दरिद्रता

कटहल के छिलके जैसी जीभ से,

मेरा लहू चाटती आई हैं।

मैं न अकेला।

मुझ जैसे तो लाख-लाख हैं, कोटि-कोटि हैं।"⁵

अर्थात् युगों से मजदूरों की जिंदगी में किसी प्रकार का बदलाव नहीं है। पुश्तों से वे मजदूरी का ही जीवन बिता रहे हैं।

नागार्जुन की कविता में मजदूरों की आर्थिक विपन्नता, अभावों से ग्रस्त जीवन का मार्मिक चित्र अंकित है। दाने-दाने के लिए तरसते सर्वहारा पीड़ित वर्ग के खाली पेट देखकर कवि का मन विचलित हो जाता है-

"खाली हैं हाथ, खाली हैं पेट

खाली हैं थाली खाली हैं प्लेट।"⁶

कवि ने मजदूरों के जीवन को बहुत करीब से देखा। उनके रहन-सहन से वे परिचित थे। “खुरदरे पैर” शीर्षक कविता में नागार्जुन रिक्षेवाले के जीवन की यथार्थ झांकी प्रस्तुत किया हैं-

“सूख गये

दूधिया निगाहों में

फटी बिवाइयों वाले खुरदरे पैर

धँस गये

कुसुम-कोमल मन में

गुट्ठल-घट्ठोवाले कुलिश-कठोर पैर”⁷

रिक्षेवाले के जीवन में सुख नाम का कोई चीज नहीं हैं।

नागार्जुन आर्थिक विषमता का चित्रण करते हुए कहते हैं कि एक वर्ग ऐसा हैं जिसे सुख सुविधा के सब साधन उपलब्ध हैं और दूसरा वर्ग अभावों की जिंदगी जीने के लिए विवश हैं-

“कौन खिला-खिला हैं, बुझा-बुझा कौन हैं

कौन हैं बुलंद आज, कौन आज मस्त हैं।

खिला-खिला सेठ हैं, श्रमिक है बुझा-बुझा

मालिक बुलंद हैं, कुली मजूर पस्त हैं

सेठ यहाँ सुखी हैं, सेठ यहाँ मस्त हैं

उसकी हैं जनवरी, उसी का अगस्त हैं”⁸

मजदूरों की यह स्थिति आज भी प्रासंगिक हैं। मालिक, सेठ सुविधाजनक जीवन बिता रहे हैं, बल्कि मजदूर नरक समान जीवन गुजार रहे हैं। दोनों की जीवन परिस्थितियों में आकाश-पाताल का अंतर हैं। नागार्जुन यह भेद भाव मिट जाने की प्रबल आशा व्यक्त करता हैं, सदभावना की कामना करते हैं-

“बड़े सहयोग भेद मिट जाए, मिटे शोषण का नाम-निशान

ढहे अन्यायों की दीवार, सुखी होवें मजदूर, किसान

हो न फूट सहयोग-भावना सब में घर कर जाए
गाँव हमारा बुद्धि वैभव से धन जन से भर जाए
जन-जन में सहयोग बढ़े विकसित हो खूब समाज
युग पलटा हैं, अब किसान मजदूर करेंगे राज।”⁹

कवि की दृष्टि जन जीवन की ओर सदा रही हैं। जन-जीवन की भावनाओं को जन-जन के हृदय तक पहुंचाना कवि का लक्ष्य रहा हैं। जीवन के दयनीय पक्ष का उदघाटन करते हुये कवि ने उन मल्लाहों के जीवन का चित्र खींचा हैं जिनके वस्त्रहीन बच्चे पानी में सिक्के खोजने में दत्तचित रहते हैं –

“मल्लाहों के नंग धड़ंग छोकरे
दो दो पैर / हाथ दो दो
प्रवाह में किसकती रेत की ले रहे छोह
बहुधा अवसारित चतुर्भुज नारायण ओह
खोज रहे पानी में जाने कौस्तुभ मणि।”¹⁰

इतना ही नहीं कलकत्ता जैसे महानगर में रहने वाले मध्यवर्गीय परिवारों जो अभाव में पलनेवाले इस वर्ग को एक कोठरी में अपने परिवार को समेटे रहना पड़ता हैं। उनके बच्चे मूक अंगूठा चूसते रहते हैं। अभाव ने इस वर्ग की कमर तोड़ डाली हैं-

“ऊपर देखते हैं, बाल्टियों के ढेर
पितरों की प्यासी रूहें
अंगूठा चूसती हैं नवजात बच्ची
खिड़की से लटका दिया हैं लाल खिलौना ।”¹¹

नागार्जुन निम्न मध्यवर्गीय परिवार में पैदा हुआ हैं। उनका सीधा संबंध मजदूरी वर्ग और किसान से रहा हैं। अतः वे मजदूरों को अपने हक के लिए लड़ने के लिए प्रेरित करते दिखाई देते हैं। कुली, मजदूर के संघर्षमय जीवन की अभिव्यक्ति इस प्रकार करते हैं-

“कुली मजदूर हैं

बोझ ढोते हैं खींचते हैं ठेला

धूल-धुआँ भाप से पड़ता हैं सबका

थके माँदे जहाँ-तहाँ हो जाते हैं ढेर

सपने में भी सुनते हैं धरती की धड़कन।”¹²

नागार्जुन ने भारतीय मजदूरों के प्रति ही नहीं बल्कि दुनिया के उन सभी मजदूरों के प्रति कलम उठाया हैं जो सर्वहारा वर्ग के प्रति कवि की सहानुभूति देश की सीमाएँ लांघकर विश्व को अपने में समेटती हैं। स्वतंत्र्योत्तर काल से लेकर आज तक मजदूरों के जीवन में बदलाव नहीं हैं। रोजी रोटी के लिए गाँवों से नगरों में आकर बसते हैं। अभाव की जिंदगी जीते हैं। श्रम के अनुसार मजदूरी न मिलने के कारण पूरे परिवार को मजदूरी करना पड़ता हैं। वे अपने बच्चों को पढ़ा भी नहीं सकते। हर प्रकार की समस्याओं से जूझना पड़ता हैं। बाबा नागार्जुन ने उन सभी समस्याओं से परिचित थे। यही कारण हैं कि नागार्जुन ने श्रमिकों की अभाव भरी जिंदगी को अपनी कविताओं के माध्यम से सहज शैली में प्रस्तुत किया। डॉ. हरिचरण शर्मा का मत हैं – “मजदूरों की विषमता और अभावों में पल रही जिंदगी, परिवार में व्याप्त आपाधापी, स्वार्थपरता, यांत्रिकता और शोषण तथा पूँजीपतियों के अत्याचार, व उत्पीड़न की कथाओं के सहारे विकसित व्यथा प्रसंगों की मुँह बोलती तस्वीर नागार्जुन की कविताओं में कैद हैं।”¹³ नागार्जुन कृषक, मजदूर, मछुआरा आदि सर्वहारा वर्ग को जीवन संघर्षी मानते हैं और वे लोग ही उनके काव्य का विषय बनते हैं। सजग रचनाकार होने के कारण आपने शोषण से मुक्ति एवं आर्थिक समानता पर विशेष बल देते हैं। वे कामना करते हैं कि किसी का शोषण न हो, कोई भूखा न रहे। इनकी समस्याएँ प्रगतिवादी काल में जितने प्रासंगिक थे आधुनिक काल में भी उतने ही प्रासंगिक हैं।

संदर्भ ग्रंथ:

1. नागार्जुन के उपन्यासों में सामाजिक और राजनीतिक संघर्ष : डॉ. नामवर सिंह - पृ.सं. 74
2. पुरानी जूतियों का कोरस : नागार्जुन - पृ.सं. 127
3. अन्नपचीसी : नागार्जुन पृ. सं. - 56
4. नागार्जुन रचनावली खंड-1 : शोभाकांत मिश्र - पृ. सं. 105
5. तालाब की मछिलियाँ : नागार्जुन पृ. सं. 15
6. युगधारा : नागार्जुन - पृ. सं. 99

7. सतरंगे पंखोंवाली : नागार्जुन - पृ. सं. 21
8. नागार्जुन रचनावली खंड-2 : शोभाकांत मिश्र - पृ. सं. 190
9. नागार्जुन रचनावली खंड-1 : शोभाकांत मिश्र - पृ. सं. 226
10. नागार्जुन की चुनी हुई रचनाएँ खंड-1 सं. शोभाकांत मिश्र – पृ. सं. 205
11. प्यासी पथराई आँखें : नागार्जुन - पृ. सं. 48
12. नागार्जुन की चुनी हुई रचनाएँ खंड-2 : सं. शोभाकांत मिश्र – पृ. सं. 132
13. नये प्रतिनिधि कवि: डॉ. हरिचरण शर्मा – पृ.सं. 211